फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 237 1 / - मार्च 2008

जनता का ज्यादा राजनीतिक होना जनता का बेड़ा गर्क करता है।

मन करता है आतंकवादी बन जाऊँ

*●**युवा मजदूर :** छह महीने में तो ब्रेक कर ही देते हैं। नई जगह लगने में कई बार महीना बीत जाता है। खाली बैठे दस दिन हो जाते हैं तो निराशा बढने लगती है। मरने को मन करता है..... "आत्महत्या पाप है" कह कर अपने को रोकता हूँ। ●**मारुति सुजुकी को पार्ट्स सप्लाई करने वाली फैक्ट्री का मैनेजर :** पावर प्रेस का ज्यादा काम है। उँगलियाँ कटने की तो कोई गिनती ही नहीं। इन दो वर्ष में पहुँचे से 18 मजदूरों के हाथ कटे हैं। दस्तावेजों में दिखाना नहीं होता है इसलिये निजी चिकित्सकों से उपचार करवाया जाता है। यह सब देख कर बहुत दुख होता है। अपनी असहायता मुझे और भी पीड़ा पहुँचाती है। ●**सत्तर वर्षीय सेवानिवृत प्रोफेसर :** सुबह-सुबह अखबार मन खराब कर देते हैं। इतनी घिनौनी बातें। मन कहता है कि नेताओं और अफसरों को गोली से उड़ा दो। ●**जो कभी गाँववाले थे :** मुजेसर के एक और नौजवान ने इधर आत्महत्या कर ली। जिन गाँवों की जमीनों पर फरीदाबाद में कारखाने खड़े हैं उन गाँवों के निवासियों की बड़ी सँख्या नशे की गिरफ्त में है। कमरों से किराया बहुतों की आमदनी का मुख्य स्रोत है। दम्भ और नशे में चूर नौजवान अपने बड़े-बूढों की बात भी नहीं सुनते। ●**बीस वर्षीय मजदूर :** रोज 12 घण्टे ड्युटी है। माल की ज्यादा माँग होने पर प्रतिदिन 16 घण्टे काम। सप्ताह में, महीने में कोई छुट्टी नहीं। जबरन है, 12-16 घण्टे नहीं रुको तो नौकरी नहीं है। पैसे घण्टे के हिसाब से। घण्टा दूसरा हो चाहे पन्द्रहवाँ, दर एक ही। उत्पादन प्रतिघण्टा अनुसार निर्धारित करते हैं। नये पीस के लिये आरम्भ में अगर 10 मिनट समय रखते हैं तो उसे घटा-घटा कर 9-8-7-6 मिनट कर देते हैं। फिर प्लस-माइनस हैं, निर्धारित से कम उत्पादन पर पैसे काटते हैं..... लाइन इनचार्ज और मास्टर बात-बात पर डाँटते-फटकारते हैं। हम इसका विरोध क्यों नहीं करते? हम टारगेट हासिल करने, पार करने में क्यों भिड़ जाते हैं? लोग सोचते क्यों नहीं? मुझे बहुत गुस्सा आता है। मन करता है साहबों को उड़ा दूँ। मन करता है आतंकवादी बन जाऊँ।*

★जो है उससे खुश नहीं हैं। बदलाव चाहते हैं।

— अपनी स्थिति में परिवर्तन के लिये हम में से प्रत्येक बहुत पापड़ बेलता-बेलती है। तन को तानने से मन को मारने तक क्या-क्या हम नहीं करते। चन्द लोग, इक्का-दुक्का व्यक्ति अपनी इच्छाओं में से कई को प्राप्त भी कर लेते हैं। लेकिन, मुड़ कर देखने पर वे बातें जिन्हें बहुत महत्वपूर्ण मानते थे वे वास्तव में गौण मिलती हैं। चौतरफा हालात बद से बदतर मिलते हैं..... हमारे प्रयास विफल हो रहे हैं।

— "व्यवस्था ही खराब है" एक सामान्य समझ बन गई है। अलग-अलग व्यक्ति की समस्याओं का समाधान नहीं निकल सकता की बात भी एक आम समझ बन गई है। बात समाज बदलने से ही बनेगी की बात भी एक सामान्य समझ बन गई है।

और, लगता है कि समाज बदलने के हमारे प्रयास एक ठहराव की स्थिति में आ गये हैं।

★वर्तमान से असन्तोष की अभिव्यक्ति जलसे-जुलूस, हड़ताल, पुलिस से टकराव, सशस्त्र विद्रोह में उल्लेखनीय तौर पर होती थी। यह तथ्य है कि दुनियाँ-भर में सौ वर्ष के दौरान सभा-हड़ताल-विद्रोह की सफलता ही इनकी असफलता साबित हुई। पूरे विश्व में कारखाने बढते आये हैं, मजदूरों की सँख्या बढती आई है, परिवार का आकार सिकुड़ता आया है, परिवार के पालन-पोषण के लिये पुरुष के संग स्त्री द्वारा नौकरी करना बढता आया है, मजदूरों के काम के घण्टे बढ रहे हैं, कार्य की तीव्रता बढती आई है, असुरक्षा बढ रही है....

असन्तोष बढता आया है, गुस्सा विस्फोटक हो गया है। लेकिन, संसार-भर में इनकी अभिव्यक्ति मीटिंग-हड़ताल-टकराव में बहुत-ही कम हो रही है। नेताओं के पीछे मजदूर कम ही दिखाई देते हैं।

★आज हमारा गुस्सा काफी-कुछ आत्मघाती राहों में फूट रहा है। अकसर हम खुद को काटते हैं, अपने निकट वालों को काटते हैं। और, हम में से इक्का-दुक्का आतंकवादी भी बन रहा-रही हैं।

★ क्या करें ? कहाँ जायें ?

अपने स्वयं के कदमों के निजी महत्व से हम अच्छी तरह परिचित हैं। कार्यस्थलों तथा निवासस्थानों वाले अपने जोड़ों-तालमेलों के व्यवहारिक महत्व हम सब के जाने-पहचाने हैं। इस विकट परिवेश में, हमारे विचार से, अपने स्वयं के और अपने जोड़ों के व्यापक महत्व के बारे में सोचने-विचारने की आवश्यकता है।

— एक व्यक्ति अनेक तालमेलों में शामिल होता-होती है। पुराने किस्म के कुछ तालमेल ढीले हो रहे हैं, टूट रहे हैं पर व्यक्ति के लिये नये तालमेलों में शामिल होना आसान हो रहा है। परिस्थितियाँ ऐसी बनी हैं, ऐसी अधिकाधिक बनती जा रही हैं कि एक जोड़ सहजता से कई जोड़ों से तालमेल बैठा सकता है। यह हमें मैं से, विभाग से, फैक्ट्री से, मोहल्ले से पार ले जा कर बड़े क्षेत्र प्रदान कर सकते हैं। सहजता से हम विश्व-व्यापी तालमेलों तक जा सकते हैं।

— व्यवहारिक हित के दायरों के बाहर वाले तालमेल आवश्यक हैं और इन्हें बनाना मुश्किल भी नहीं है। हमारे ऐसे तालमेल जो हो रहा है उसे सहज ही जब-तब ठप्प कर सकते हैं। यह हमें साँस लेने की फुरसत प्रदान करेंगे। यह हमें बदहवासी से बचायेंगे।

— मण्डी और मुद्रा ने दुनियाँ को जबरन जोड़ा है। जबकि अपने तालमेलों के जरिये हम संसार के पाँच-छह अरब लोगों से अपनी इच्छा वाले जोड़ बना सकते हैं। वर्तमान से पार पाने के लिये अनुभवों और विचारों के आदान-प्रदान तो एक-दूसरे को मदद करेंगे ही करेंगे। विश्व में नई समाज रचना के लिये जारी मन्थन को हमारे यह जोड़-तालमेल गति प्रदान करेंगे।

माँगें हैं : जीवन्त जीवन, उल्लास, खुशी, प्रेम, आदर, सन्तोष

— एक तरह से कहें तो हमें अपने लिये, अपनों के लिये समय-समय-समय चाहिये। 12-16 घण्टे खटने को मजबूर हम लोगों की असल गरीबी अपने पास समय का अकाल है।

— गेट से लौटा दिये जाने पर, ब्रेक पर, खाली बैठने पर समय हमारे लिये काल बन जाता है। चिन्तायें बढ़ाने वाला यह समय हम पर थोपा-लादा हुआ समय होता है, यह हमारा अपना समय नहीं होता।

— बारह-सोलह घण्टे के इस दौर में महीने-दो महीने में तीन-चार दिन लगातार छुट्टी करना तो जीवन को बचाये रखने मात्र के लिये आवश्यक है। आराम करने, तसल्ली से सोने, मिलने-जुलने, हँसने-बोलने की थोड़ी पूर्ति ही तीन-चार दिन लगातार छुट्टियों से हो पायेगी।

— लगातार काम हमें पगला रहा है। कारखानों-दफ्तरों का अधिकाधिक सुनसान होना जीवन्त जीवन के लिये एक प्रस्थान-बिन्दू है।

तालमेल से, मिलजुल कर छुट्टियाँ करना उल्लास के फूल खिलाना है।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद - 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

आर के प्रोफाइल्स मजदूर : "प्लॉट 262-ओ सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 12½ और 12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं — एक छोटे विभाग में सुबह 8½ से साँय 6 की ड्युटी है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देते हैं.... 9½ घण्टे से जो अधिक होता है उसे ओवर टाइम कहते हैं। जिन 30-35 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं उन्हें कम्पनी स्थाई मजदूर कहती है और उन में हैल्परों को 9½ घण्टे रोज ड्युटी पर महीने के 3510 रुपये। जिन 50-55 की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं उन्हें कम्पनी कैजुअल वरकर कहती है और रोज 9½ घण्टे ड्युटी पर महीने के 2800 रुपये देती है। रबड़ का काम है और कार्बन विभाग में तो बहुत-ही गन्दा काम है। यहाँ बनते रबड़ के रोल दुबई, जमशेदपुर भेजे जाने के संग-संग बजाज, महिन्द्रा, स्वराज माजदा, डी टी सी को सप्लाई किये जाते हैं।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी एस्कोर्ट्स के प्लान्टों में काम करते हम कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की पहली जनवरी की दिहाड़ी मारी गई। कम्पनी ने 1 जनवरी को उत्सव मनाया जिसमें स्थाई मजदूरों को बुलाया और हमें आने से मना कर देया। पिछले वर्ष के अनुभव के दृष्टिगत हम ने यूनियन प्रधान से बात की तब वे बोले थे कि तुम भी हमारे मजदूर भाई हो, चिन्ता मत करो, पहली जनवरी की दिहाड़ी मिलेगी। लेकिन जनवरी माह की तनखा हमें दी तो उसमें 1 जनवरी के पैसे नहीं थे। तनखा महीने पर देते हैं पर हमें दैनिक वेतन पर रखा बताते हैं — कम्पनी में साप्ताहिक अवकाश और माह के दूसरे शनिवार की छुट्टी के पैसे हमें नहीं देते। समान काम के लिये समान वेतन की बात तो दूर-दूर तक नहीं है, बोनस मे भी दुभान्त है। स्थाई मजदूरों को 20% बोनस और कैजुअल वरकरों को 8.33% ही..... स्थाई को बोनस के पैसे नवम्बर 07 में दे दिये गये, हम कैजुअलों को आज 28 फरवरी तक किसी प्लान्ट में नहीं दिये हैं। एस्कोर्ट्स समूह की फैक्ट्रियों में काम करते ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को तो बोनस देते ही नहीं।"

ग्लोरियस इलेक्ट्रोनिक्स मजदूर : "41 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 100 वरकर **एल जी के लिये** प्लास्टिक पार्ट्स बनाते हैं। कम्पनी ने स्वयं 3-4 को ही रखा है, बाकी सब मजदूर एक ठेकेदार के जरिये रखे हैं। हैल्परों की तनखा 2000 और कारीगरों की 2500 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

अल्पिया पैरामाउन्ट वरकर : "प्लॉट 60 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में अधिकारियों ने 8 फरवरी को छापा मारा। कम्पनी को इसकी सूचना पहले ही थी इसलिये जिनकी तनखा 2200-3000 रुपये है उन्हें पैसे 6 फरवरी को ही दे दिये थे। अधिकारियों के सामने 3510-3640 रुपये वेतन वाले स्थाई मजदूरों को ही पैसे दिये। अल्पिया पैरामाउन्ट में 400 कैजुअल वरकर हैं जिनमें हैल्परों की तनखा 2200 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये है। चार सौ कैजुअलों में 23 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. रहती हैं। छह महीने 23 के एक समूह की तनखा से राशि काटते हैं, फिर बन्द कर देते हैं और दूसरे 23 के समूह के साथ यह करने लगते हैं। जिनके पैसे जब काटते हैं तब भी उन्हें ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, 36 घण्टे लगातार रोक लेते हैं। महीने में 200 घण्टे ओवर टाइम। साप्ताहिक अवकाश के दिन रविवार को भी जबरन ड्युटी — रविवार को काम पर नहीं जाओ तो सोमवार की हाजिरी काट लेते हैं।"

लेआप हम्निस एपरेल्स मजदूर : "13/1 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 तक प्रतिदिन ड्युटी है, महीने में 7-8 रोज रात 2 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और वह भी 3200 के हिसाब से। रात 8 बजे तक कम्पनी 3 चाय, एक समोसा, एक पैकेट बिस्कुट देती है और रात 2 बजे के लिये 30 रुपये रोटी के। फैशन के महँगे कोट, जैकेट, चप्पल, कमीज, स्कर्ट बनते हैं। स्टाफ समेत 250 लोग हैं — 180 को कैजुअल वरकर कहते हैं और इनकी ई.एस.आई. व.पी.एफ. नहीं। हैल्परों की तनखा 3300 रुपये।"

कौशिको मशीन टूल्स वरकर : "प्लॉट 250 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में काम करते 150 मजदूरों में से 125 को दो ठेकेदारों के जरिये रखा है। इन 125 में हैल्परों की तनखा 2500 तथा ऑपरेटरों की 3000 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। वेतन हर महीने देरी से — 7 से पहले की बजाय 22 तारीख को। फैक्ट्री में पावर प्रेस बनते हैं। डायरेक्टर गाली देता है।"

सेन्डेन विकास मजदूर : "प्लॉट 65 सैक्टर-27 ए स्थित फैक्ट्री में अधिकारियों ने 16 फरवरी को छापा मारा। टाइम आफिस वाले बुला-बुला कर वरकरों से कह रहे थे कि फैक्ट्री में ओवर टाइम नहीं होता कहना। जबकि वास्तव में हम से महीने में 200 घण्टे तक ओवर टाइम करवाया जाता है। ठेकेदारों के जरिये रखे हम मजदूरों को जबरन रोकते हैं और ओवर टाइम का भुगतान भी सिंगल रेट से करते हैं।"

शालीमार इंजिनियर्स वरकर : "प्लॉट 178 सैक्टर-58 स्थित फैक्ट्री में 33 पावर प्रेस हैं और सुबह 8½ से रात 9 तक की एक शिफ्ट है। साप्ताहिक छुट्टी के दिन, रविवार को भी ड्युटी। शीट मैटल का काम है, एक्सीडेन्ट होते रहते हैं, चोटें लगती रहती हैं पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते। पन्द्रह वर्ष से काम कर रहे 7 प्रेस ऑपरेटरों के पास ई.एस.आई. कार्ड हैं। पचास अन्य प्रेस ऑपरेटरों को ई.एस.आई. के कच्चे कार्ड देते हैं। हैल्परों को कुछ नहीं देते और चोट लगने पर निजी चिकित्सकों से उपचार करवाते हैं। कच्चे कार्ड वाले पूरे महीने काम करते हैं पर उनकी उपस्थिति 15 दिन ही दिखाते हैं। हैल्परों की तनखा 2500-2600 रुपये है पर हस्ताक्षर 3600 पर करवाते हैं। कच्चे कार्ड वालों की तनखा 3200-3300 रुपये है पर हस्ताक्षर 3800 पर करवाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

श्याम टैक्स इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 10 ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों में हैल्परों की तनखा 2200 रुपये। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

जी एल ऑटो पार्ट्स वरकर : "14 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 3 स्थाई मजदूर, दो ठेकेदारों के जरिये रखे 40 मजदूर और 250 कैजुअल वरकर काम करते हैं। फैक्ट्री में **हीरो होण्डा** मोटरसाइकिल के पुर्जे बनते हैं। कैजुअलों में हैल्परों की तनखा 1800-1900 और कारीगरों की 2500 रुपये।"

टायोमा इंजिनियरिंग मजदूर : "प्लॉट 377 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों में हैल्परों की तनखा 2000 और पावर प्रेस ऑपरेटरों की 2900-3200 रुपये। हैल्परों से ग्राइन्डर तथा ड्रिल मशीनें भी चलवाते हैं। हैल्परों में 10-12 महिला मजदूर भी हैं। अधिकारी 7 फरवरी को फैक्ट्री आये और तनखा पूछी तो हैल्परों ने 2000 रुपये बताई। अधिकारी 3-4 मजदूरों के हस्ताक्षर करवा कर ले गये। फैक्ट्री में गाड़ियों के मीटर बनते हैं।"

संगीता इन्टरनेशनल वरकर : "प्लॉट 9 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2700 और ऑपरेटरों की 3000-3500 रुपये। सी एन सी ऑपरेटरों का वेतन 8000 रुपये। ई.एस. आई. व पी.एफ. कुछ मजदूरों की ही हैं।"

निमेक्स इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 192 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2100 और ऑपरेटरों की 3000-3600 रुपये। यहाँ **मारुति** और **आयशर** के पुर्जे बनते हैं। पावर प्रेस हैं, एक्सीडेन्ट पर प्रायवेट में उपचार — 45 मजदूरों में 20 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। साहब गाली देते हैं।"

टालब्रोस वरकर : "प्लॉट 74-75 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे रोज ड्युटी पर महीने के 3510 रुपये देते हैं।"

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान — मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद–121001
2. प्रकाशन अवधि — मासिक
3. मुद्रक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2008 — हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

गुड़गाँव से ...... (पेज चार का शेष)

बेच कर चलते बने। डायरेक्टर अब शीतला मन्दिर के पास वाशिंग की फैक्ट्री चला रहे हैं पर श्रम अधिकारी कहते हैं कि उनका पता नहीं है — हम ने श्रम विभाग में शिकायत की हुई है।"

नौकरी ढूँढता मजदूर : "25 फरवरी को दोपहर 12½ बजे के करीब प्लॉट 225 उद्योग विहार फेज-1 में **गौरव इन्टरनेशनल** फैक्ट्री गेट पर एक लड़की रो रही थी। यह देख कर इधर-उधर से 15-20 लोग एकत्र हो गये। लड़की ने बताया कि सुपरवाइजर की अश्लील बातों पर एतराज करने पर उसे फैक्ट्री से बाहर कर दिया है। तभी इनचार्ज आया और बोला कि घर जाओ, जब औरों को पैसे दें तब अपने पैसे ले जाना, किसी को यह बात बताना मत, जी एम साहब तक बात पहुँचाई जायेगी।"

रोलैक्स वरकर : "प्लॉट 303 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों को तनखा 2554 रुपये देते हैं पर हस्ताक्षर 3510 पर करवाते हैं। ऑपरेटरों की तनखा 2950 और वेल्डरों की 3500 रुपये। वेतन देरी से — जनवरी की तनखा 15 फरवरी को देनी शुरू की। साहब गाली देते हैं।"

कैलाश रिबन मजदूर : "प्लॉट 403 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1700 और कारीगरों की 2500-2700 रुपये। तीन सौ मजदूरों में से 175 के ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 100 को ही देते हैं। जिन्हें 1700 रुपये तनखा देते हैं उनमें से कुछ से 3510 पर हस्ताक्षर करवाते हैं। सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

थीटा इलेक्ट्रीकल्स वरकर : "प्लॉट 44 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 2000 और कारीगरों की 3000 रुपये। फैक्ट्री में काम करते 300 मजदूरों में 50 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ.।"

पूनम इण्डिया मजदूर : "प्लॉट 840 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½से साँय 6 की शिफ्ट है पर रात 2 बजे तक जबरन रोकते हैं। नहीं रुको तो मारते हैं। हैल्परों को भर्ती के समय तनखा 2500 बताते हैं पर लगाते 2100 रुपये हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। तनखा हर महीने देरी से — जनवरी का वेतन आज 26 फरवरी तक नहीं दिया है।"

मनीसेन्ट्रा वरकर : "प्लॉट 212 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 8 घण्टे के 70-75 रुपये और सिलाई कारीगरों को 110-130 रुपये। सुबह 9½ से साँय 6½ की शिफ्ट है और सप्ताह में 2-3 रोज रात 12 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और रोटी के लिये 20 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में से 20-25 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।"

इनस्टाइल मजदूर : "प्लॉट 378 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में भविष्य निधि राशि के तौर पर तनखा से 18 प्रतिशत काट रहे हैं।"

भारत एक्सपोर्ट वरकर : "प्लॉट 493 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8½ की ड्युटी रोज है और उसके बाद रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों को तनखा 2554 रुपये देते हैं पर हस्ताक्षर 3510 पर करवाते हैं।"

स्टिक पेन मजदूर : "प्लॉट 318 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1800-2400 और ऑपरेटरों की 3510 रुपये।"

नाम नहीं मालूम : "प्लॉट 883 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 500 लोग काम करते हैं — ई.एस.आई. व पी.एफ. स्टाफ के होंगे, मजदूरों में किसी के नहीं हैं। सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 120 रुपये। सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी रोज। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

कृष्णा लेबल मजदूर : "प्लॉट 162 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 9½ घण्टे की ड्युटी पर हैल्पर को महीने के 3510 और सिलाई कारीगर को 3640 रुपये। तनखा से लगातार ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर जमा नहीं करते। कार्यरत मजदूर का बीच-बीच में ब्रेक दिखा का राशि जमा नहीं करते — एक वरकर का 11 महीने का फण्ड 2600 रुपये से कम निकला।"

ग्राफ्टी एक्सपोर्ट वरकर : "प्लॉट 377 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में रोज सुबह 9½ से रात 8 तक ड्युटी पर हैल्पर को महीने के 3510 रुपये देते हैं। फिर रात 2 बजे तक रोक लेते हैं और रात 8 के बाद वाले समय को ओवर टाइम कहते हैं जिसका भुगतान भी सिंगल रेट से करते हैं। फैक्ट्री में काम करते 400 मजदूरों में से मात्र 15-20 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं।"

जाह्नवी एक्सपोर्ट मजदूर : "प्लॉट 124 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में दिसम्बर-मध्य में 15 महिला मजदूरों को धागे काटने के लिये 2200 रुपये तनखा पर रखा। रोज 2 घण्टे ओवर टाइम, रेट सिंगल। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। काम नहीं है कह कर अचानक 11 फरवरी को निकाल दिया।"

धीर इन्टरनेशनल वरकर : "प्लॉट 299 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2000-2200 रुपये।"

ज्योति एपरेल्स मजदूर : "प्लॉट 159 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और फण्ड का नम्बर नहीं बताते।"

हरियाणा एस डी वरकर : "प्लॉट 318 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में साप्ताहिक छुट्टी नहीं है। तीसों दिन काम पर महीने के 2700 रुपये देते हैं।"

गुलाटी रीटेल मजदूर : "प्लॉट 203 उद्योग विहार फेज-1 स्थित कम्पनी में हम 200 थे — अधिकतर को 19 फरवरी को निकाल दिया। अब हम 25 बचे हैं और हमें जनवरी की तनखा आज 26 फरवरी तक नहीं दी है।"

पानी के बिना
बिजली के बिना ☞

लार्सन एण्ड टूब्रो

लार्सन एण्ड टूब्रो मजदूर : "12/4 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में रविवार के साप्ताहिक अवकाश के बाद 4 फरवरी को सुबह हम ड्युटी के लिये फैक्ट्री पहुँचे तो गेट पर फैक्ट्री बन्दी की सूचना चिपकी पाई। सब कुछ सामान्य चल रहा था, कोई लफड़ा नहीं था, अचानक यह सब हुआ। कम्पनी ने उसी दिन हिसाब बना कर मजदूरों के घर भेज दिया।

"परतें खुलने लगी। कम्पनी ने स्टाफ को सोमवार को फैक्ट्री नहीं आने के लिये पहले ही कह दिया था। कम्पनी ने सरकारी विभागों में मजदूरों के विरुद्ध तोड़-फोड़, मार-पीट की शिकायतें कर उन्हें फैक्ट्री बन्द करने का कारण बताया था। कुछ भी हुआ ही नहीं था की बात सरकारी विभागों के सामने बार-बार ला कर मजदूर 7 फरवरी को फैक्ट्री में अलमारियों से अपना सामान निकाल सके।

"लार्सन एण्ड टूब्रो कम्पनी की स्विचगीयर फैक्ट्री यहाँ है। फैक्ट्री का क्षेत्र बहुत है पर अधिकतर काम बाहर करवाया जाता है। इसलिये इस समय मात्र 68 स्थाई मजदूर और स्टाफ के 50 लोग यहाँ काम करते थे। स्टाफ वालों को कम्पनी ने 4 फरवरी को हिसाब नहीं भेजा परन्तु उन्हें मुम्बई, अहमदनगर, कोयम्बेतूर जाने को कहा। और फिर... कम्पनी ने नोटिस लगाया कि जिन मजदूरों को नौकरी चाहिये वे सुपरवाइजरों के पद के लिये आवेदन करें।

" कुछ समय पहले कम्पनी ने लार्सन एण्ड टूब्रो के मुख्यालय के लिये 40 करोड़ रुपये में एक इमारत यहाँ तैयार की है। स्विचगीयर फैक्ट्री इसके पीछे पड़ने लगी और गेट अलग-अलग बना दिये गये। मुख्यालय के लिये फैक्ट्री की बाकी जमीन लेने के लिये फैक्ट्री बन्द करने के वास्ते साहबों द्वारा यह प्रपंच किया गया।"

सुविधाओं के बिना
मानव जी लेगा
पर प्रेम और विश्वास के बिना
निश्चित मर लेगा।

— नरेन्द्र नाथ, ग्वालियर

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :
★अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

कॉल सैन्टर

कोर बी पी ओ मजदूर : "प्लॉट 238 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव स्थित चार मंजिला इमारत में हम 600 वरकर काम करते थे। ग्राहकों के नक्शेकदम कम्पनी ने 21 दिसम्बर से 1 जनरी तक छुट्टियाँ की थी। पहली जनवरी को खबर फैली कि **डिजिटल सिनर्जीज** की सुश्री रश्मि जैन ने 31 दिसम्बर को सब जगह ताले जड़वा दिये हैं और चाबियाँ ले कर चली गई हैं।

"कोर बी पी ओ ने प्रति सीट (मेज, कुर्सी, कम्प्युटर, फोन) के हिसाब से जगह डिजिटल से किराये पर ली थी। यहाँ डिजिटल की तरफ से **एस एल वी** गार्ड और कोर की तरफ से **ग्रुप फोर** गार्ड थे। किसी तरह इमारत में घुसा कोर का जनरल मैनेजर अन्दर बन्द हो गया था और फोन से सूचना फैला रहा था। पहली जनवरी को एस एल वी के 30-35 गार्ड और ग्रुप फोर के 40-45 गार्ड एकत्र कर लिये गये थे। पुलिस आई और चली गई। एस एल वी गार्ड किसी को इमारत के अन्दर नहीं जाने दे रहे थे। अन्दर बन्द कोर का जी एम चाबी बनाने वालों को बुला कर ताले खुलवाने की कहता रहा। रात 3½ बजे कोर जी एम को स्ट्रेचर पर बाहर ला कर कल्याणी अस्पताल में भर्ती किया गया। बाद में सुनने में आया कि कोर ने गुण्डे ला कर जबरन घुसने की योजना बनाई थी और इसके लिये किसी को एक लाख रुपये भी दिये थे पर फिर यह हुआ नहीं। डिजिटल की रश्मि जैन के केन्द्रीय मन्त्री की रिश्तेदार होने की बातें।

"कोर कम्पनी ने 7 जनवरी को हम वरकरों की मीटिंग ली। समय लगेगा कह कर फिलहाल नौकरी ढूँढने को कहा। दिसम्बर का वेतन हमारे बैंक खातों में शीघ्र भेज देने की बात की। लेकिन भेजा नहीं। आज 25 फरवरी तक हमें दिसम्बर की तनखा नहीं दी है। नौकरी तो गई ही, अब साहब कहते हैं कि तनखा की उम्मीद कम है। वरकरों को लाने-ले जाने के लिये चार ट्रान्सपोर्टरों के जरिये रखी 85 गाड़ियों का 60 लाख रुपये किराया बकाया, खानपान देने वाले के 7 लाख रुपये बकाया. .... कम्पनी का स्थानीय मुख्यालय कोर बी पी ओ (इण्डिया) प्रा.लि., 815-816 इन्टरनेशनल ट्रेड टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-110019 में स्थित है और मुख्यालय है :

CORE BPO LTD., 16-19 SOUTHAMPTON PLACE, HOLBORN, LONDON WCIA 2AJ, U.K. <www.corebpo.com>"

दिल्ली से–

पहली फरवरी से डी. ए. के 117 रुपये जुड़ने के बाद 01.02. 2008 से दिल्ली में सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : 8 घण्टे की ड्युटी और सप्ताह में एक छुट्टी पर महीने के अकुशल श्रमिक (हैल्पर) को 3633 रुपये (8 घण्टे के 140रुपये); अर्ध-कुशल मजदूर की कम से कम तनखा 3799 रुपये (8 घण्टे के 146 रुपये); कुशल श्रमिक का कम से कम वेतन 4057 रुपये (8 घण्टे के 156रुपये)। स्टाफ में अब कम से कम तनखा मैट्रिक से कम की 3824 रुपये; मैट्रिक पास परन्तु स्नातक से कम की 4081 रुपये; स्नातक एवं अधिक की 4393 रुपये।

राशि एक्सपोर्ट्स मजदूर : "सी-63/1 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी है – रविवार को 9 से 6 तक ही। महीने में 22-23 दिन नाइट लगती है, रात 2 बजे छोड़ते हैं – सुबह 9 से रात 2 बजे तक काम करना। महिला मजदूरों को रात 8 बजे छोड़ देते हैं। ओवर टाइम की बात नहीं है, पूरे समय एक ही रेट रहता है। रात 2 बजे तक के लिये 15 रुपये रोटी के देते हैं। फैक्ट्री में कुल 500 मजदूर हैं और स्थाई, कैजुअल, ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों के पंचिंग कार्ड अलग-अलग हैं। कम्पनी ने स्थाई मजदूरों में से ही कुछ को ठेकेदार बना रखा है – वे नौकरी भी करते हैं और ठेका भी चलाते हैं। जिन्हें ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर कहा जाता है उन्हें 8 घण्टे के 70 रुपये देते हैं और उनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सिलाई कारीगर को 8 घण्टे के 140 रुपये। फैक्ट्री में 150 से ज्यादा दर्जी हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. एक टेलर के भी नहीं हैं। यहीं पर युनाइटेड एक्सपोर्ट्स नाम की कम्पनी के मजदूर भी हैं।"

बुटीक इन्टरनेशनल वरकर : "डी एस सी ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 11 की ड्युटी है – रविवार को रात 10½ बजे छोड़ देते हैं, कभी साँय 5 पर भी। दबाव इतना कि एक छुट्टी पर चार दिन बैठा देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से और रोटी के लिये 20 रुपये देते हैं। हैल्परों की तनखा 3640 और सिलाई कारीगरों की 3900 रुपये। फैक्ट्री में काम करते 500 मजदूरों में सिर्फ 50-60 की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और उन में भी कार्ड किसी को नहीं, फण्ड की पर्ची किसी को नहीं।"

गुड़गाँव से –

पी एम पी मजदूर : "प्लॉट185 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 8½ की ड्युटी है। ओवर टाइम के पैसे 6½ रुपये प्रति घण्टा देते हैं! प्लास्टिक मोल्डिंग का काम है और **मारुति सुजुकी** कारों की स्टीयरिंग बनती हैं। हैल्परों की तनखा 2450 रुपये है और 3-4 साल से लगातार काम कर रहों की भी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।" **(बाकी पेज तीन पर)**

समरत्त क्लोथिंग वरकर : "प्लॉट 13 सैक्टर-34 स्थित फैक्ट्री अचानक 20 जून 07 को बन्द कर दी गई। हम 500 मजदूरों को मई की तथा 20 जून तक की तनखा नहीं दी। पता चला कि मशीनें प्लॉट 819 उद्योग विहार फेज-5 में ले गये हैं। अपने वेतन के पैसे लेने हम वहाँ गये। डायरेक्टर सामान

विचारणीय

रात को जागना

(यहाँ 'दि पीपल' के मार्च-अप्रैल 08 अंक से ली जानकारियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। सम्पर्क के लिये : THE PEOPLE, P.O. BOX 218, MOUNTAIN VIEW, CA 94042-0218, USA. <www.slp.org>)

सूर्योदय से सूर्यास्त वाला प्राकृतिक दिन महत्व खोता जा रहा है। बढती रोशनी रात को रात नहीं रहने दे रही।

रात्रि के अन्धेरे में मानव शरीर सामान्य तौर पर मेलाटोनिन हारमोन का उत्पादन करता है। यह हारमोन शरीर में रसोलियाँ नहीं बनने देने में एक भूमिका अदा करता है। इसलिये शरीर में मेलाटोनिन की कम मात्रा कैन्सर की सम्भावना बढा सकती है।

रात को काम करने वालों, रात को जागने वालों में मेलाटोनिन कम होती है क्योंकि रोशनी शरीर में इसके उत्पादन को रोक देती है। पूर्ति के लिये ऊपर से मेलाटोनिन लेना समाधान नहीं है क्योंकि यह इस हारमोन के प्राकृतिक उत्पादन को बन्द करने की प्रवृति लिये है।

रात की पाली में काम करती महिलाओं में स्तन कैंसर अधिक पाया गया है। रात्रि शिफ्ट में काम करते पुरुषों में प्रोस्टेट ग्रन्थी का कैन्सर अधिक पाया गया है।

सूर्यास्त के बाद भी फैक्ट्रियों, हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशनों, मीडिया, होटलों में काम, ड्राइवरों-सेक्युरिटी गार्डों द्वारा काम विश्व-भर में सामान्य बात बन गई है। और ऐसा काम बढता जा रहा है। इधर यूरोप-अमरीका-आस्ट्रेलिया से भारत में स्थानान्तरित कॉल सेन्टरों, बी पी ओ का बढता कार्य रात को ही काम करने को लाखों की नियति बना रहा है। देर रात तक टी.वी. के जरिये प्रायोजित आनन्द-प्रायोजित पीड़ा का उपभोग दुनियाँ में महामारी बन गया है। टशन के तौर पर जागते हुये रात के दो बजाना..... खालीपन से भागने के लिये नाइट क्लब-नाइट लाइफ।

लाखों वर्ष के दौरान हमारा शरीर रात को सोने के लिये ढला है। कब सोते हैं यह महत्वपूर्ण है। कब जागते हैं और कब सोते हैं यह हमारे शरीर द्वारा अपनी मरम्मत करने पर प्रभाव डालते हैं। दिन में सोने पर भी रात्रि में जागने वालों की नींद पूरी नहीं होती.....नींद की कमी शरीर की प्रतिरोध क्षमता घटा कर कैन्सर के खतरे बढा देती है।

हमारे शरीर की प्रकृति के विरुद्ध रात को जागना, रात्रि को काम करना हृदय रोग की आशंका भी बढाता है। अतिरिक्त थकावट तथा चिड़चिड़ापन रात को जागने से जुड़े हैं और यह स्वयं में सम्बन्धों को बिगाड़ना लिये हैं।

रोशनी हमारे जीवन का विस्तार नहीं कर रही। रात को जागना तन की पीड़ा व रोग और मन के अवसाद लिये है।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद – 121001

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट देल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011